RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल–011/2015-17

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र

वर्ष: 75, अंक : 24 एक प्रति 2 : रुपये

रविवार 26 अगस्त, 2018

विक्रमी सम्वत् 2075, सृष्टि सम्वत् 1960853119

दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 100 रुपये

आजीवन शुल्क : 1000 रुपये

दूरभाष : 0181-2292926, 5062726

E-mail: apspunjab2010@gmail.com,

www.aryapratinidhisabha.org

वर्ष–75, अंक : 24, 23-26 अगस्त 2018 तदनुसार 10 भद्रपद, सम्वत् 2075 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

धर्म के रक्षकः योगीराज श्रीकृष्ण

लेखकः श्री सुदर्शन शर्मा प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.)

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे।।

गीता के चौथे अध्याय के सातवें तथा आठवें श्लोक में श्रीकृष्ण के धर्मरक्षक स्वरूप का बोध होता है। इस संसार में आने वाले हर व्यक्ति की इच्छा होती है कि वह संसार में जाकर ऐसे कर्म करेगा जिससे उसका यश और कीर्ति हो। आज इन दोनों श्लोकों के द्वारा पौराणिक मतावलम्बियों द्वारा यह सिद्ध करने का प्रयास किया जाता है कि ईश्वर अवतार लेता है और श्रीकृष्ण भी अवतारी पुरूष थे। परन्तु इन दोनों श्लोकों का भाव समझने से कहीं पर भी यह प्रतीत नहीं होता कि इसमें अवतारवाद का वर्णन है।

योगीराज श्रीकृष्ण

योगीराज श्रीकृष्ण की इन श्लोकों में धर्म के प्रति निष्ठा की भावना दृष्टिगोचर होती है। उसी भावना को व्यक्त करते हुए उन्होंने अपने शब्दों में अर्जुन को उपदेश देते हुए कहा कि- जब- जब इस संसार में धर्म की हानि होगी, अधर्म की उन्नति होगी। उस समय मैं धर्म के उद्धार के लिए इस संसार में आऊंगा। दूसरे श्लोक में कहा कि सज्जनों की रक्षा के लिए दुष्टों के विनाश के लिए तथा धर्म की संस्थापना के लिए युग-युग में जन्म लेता रहूँगा। इन श्लोकों में कहीं पर भी यह नहीं कहा गया कि ईश्वर का अवतार होता है, ईश्वर जन्म लेता है, श्री कृष्ण हर युग में जन्म लेते हैं। यह कुछ स्वार्थी लोगों के दिमाग की उपज है जो अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए अवतारवाद को बढ़ावा देते हैं। श्रीकृष्ण हर जन्म में धर्म का उद्धार करना चाहते हैं, सज्जनों का भला करना चाहते हैं, अपने सामर्थ्य से दुष्टों का विनाश करना चाहते हैं। अच्छे कर्म करने वाले हर व्यक्ति की इच्छा होती है कि उसे अगला जन्म भी अच्छा मिले जिससे वह धर्म के कार्य करता रहे। बुरे से बुरा कर्म करने वाला व्यक्ति भी अन्तिम समय में यही सोचता है कि इस जन्म को तो व्यर्थ में गवां दिया परन्तु अगला जन्म अच्छा मिले जिससे धर्म के कार्य, परोपकार के कार्य कर सकूं। योगीराज श्रीकृष्ण तो साधक थे, चिन्तक थे, कर्मशील थे। कर्म की महत्ता अर्जुन को समझाते हुए श्रीकृष्ण कहते हैं कि-

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते संगोऽस्त्वकर्मणि।।

अर्थात् तुझे केवल कर्म करने का अधिकार है, कर्म करना तेरे हाथ में है, कर्मों के फलों पर तेरा अधिकार कभी नहीं है अर्थात् फल मिलना या न मिलना कभी भी तेरे हाथ में नहीं है। इसलिए अमुक कर्म का अमुक फल अवश्य मिले, यह हेतु, यह इच्छा मन में रख कर काम करने वाला तू मत बन।

ऐसा उपदेश दूसरों को वही दे सकता है जो स्वयं कर्मशील हो। श्रीकृष्ण हमेशा धर्म की रक्षा के लिए प्रयत्नशील रहे। महाभारत के युद्ध को रोकने का भरपूर प्रयास किया। यहां तक कि दुर्योधन के सामने 5 गांव पाण्ड़वों को देने का प्रस्ताव भी रखा परन्तु दुर्योधन ने उस प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया। श्रीकृष्ण नहीं चाहते थे कि महाभारत का युद्ध हो। क्योंकि वे युद्ध के दुष्परिणामों को भली भान्ति जानते थे। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने सत्यार्थ प्रकाश के ग्याहरवें समुल्लास की अनुभूमिका में लिखा है कि वेदों की अप्रवृत्ति के कारण महाभारत का युद्ध हुआ। योगीराज श्रीकृष्ण स्वयं इस बात को जानते थे कि युद्ध से धर्म का नाश होगा, लोग अधर्म के मार्ग का अनुसरण करेंगे।

ऐसे धर्म के रक्षक योगीराज श्रीकृष्ण को रसिक, गोपियों के साथ नाचने वाला, चोर आदि बताना उनके उज्जवल और पवित्र जीवन के साथ अन्याय है, उनकी तपस्या को कलंकित करना है। जिस रूप में आज श्रीकृष्ण महाराज की पूजा की जाती है, श्रीकृष्ण के नाम पर रासलीलाएं की जाती हैं, श्रीकृष्ण का वेश बनाकर लड़कियों के साथ नचाया जाता है, उन्हें चोरी करते हुए दिखाया जाता है वह अत्यन्त घृणित है। जिसने अपने प्रत्येक कार्य में आदर्शों को स्थापित किया है, प्रत्येक कार्य के द्वारा लोगों को कर्त्तव्य मार्ग पर चलने का संदेश दिया है उसके चरित्र को चोर, कामी, लम्पट के रूप में वर्णन करना उनके साथ अन्याय है।

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में श्रीकृष्ण के चरित्र का वर्णन करते हुए लिखा है कि-देखो श्रीकृष्ण का इतिहास महाभारत में अत्युत्तम है। उनका गुण, कर्म, स्वभाव और चरित्र आप्त पुरूषों के सदृश है। जिसमें कोई अधर्म का आचरण श्रीकृष्ण जी ने जन्म से मरणपर्यन्त बुरा काम कुछ भी किया हो ऐसा नहीं लिखा।

3 सितम्बर 2018 को धर्मरक्षक योगीराज श्रीकृष्ण का जन्मदिवस मनाते हुए उनके सच्चे स्वरूप को जानने का प्रयास करें। महाभारत में जो अपना आदर्श जीवन प्रस्तुत किया है, धर्म का जो स्वरूप हमारे समक्ष रखा है, गौ सेवा का जो उदाहरण हमारे समक्ष उपस्थित किया है, गीता के रूप में संसार को जो अलौकिक ज्ञान दिया है, अर्जुन को जो कर्त्तव्य पालन करने का पाठ पढ़ाया है उन कार्यों से जनता को अवगत कराएं।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर विशेष

लोकतन्त्र के प्रथम प्रणेता : योगेश्वर श्रीकृष्ण

ले.-सत्यपाल आर्य एडवोकेट

आर्यावर्त्त में श्रीराम और श्रीकृष्ण दो ऐसे महापुरुष हुए हैं जिन्हें राष्ट्रपुरुष और इतिहासपुरुष की दृष्टि से अद्वितीय कहा जा सकता है। श्रीराम मर्यादा पुरुषोत्तम हैं और श्रीकृष्ण लीला पुरुषोत्तम हैं। पुरुषोत्तम दोनों हैं। पुरुषोत्तम अर्थात् उत्तम पुरुष अर्थात् आर्य। आर्यत्व की दृष्टि से जीवन को उत्तमता की पराकाष्ठा तक ले जाने वाले ये दोनों ऐसे अनुकरणीय महापुरुष हैं जिनसे युग-युगान्तर तक मानवजाति प्रेरणा ग्रहण करती रहेगी।

श्रीकृष्ण के समान प्रगल्भ बुद्धिशाली, कर्तृत्ववान, प्रज्ञावान, व्यवहारकुशल, ज्ञानी पराक्रमी पुरुष आज तक संसार में नहीं हुआ है। यह कथन अतिशयोक्ति नहीं माना जाना चाहिए। वे ध्येयवादी के साथ-साथ व्यवहारवादी भी थे और दोनों सीमाओं के निपुण ज्ञाता थे। सत्यनिष्ठा के समान ही कुटिल राजनीति अर्थात् राजधर्म के सफल उपदेष्टा थे। वे गृहस्थ जीवन प्रेमी होने के साथ अत्यन्त संयमी, सदाचारी, चरित्रवान, एक पत्नीव्रती और योग विद्या में पारंगत योगेश्वर थे। संक्षेप में यह नि:संकोच कहा जा सकता है कि श्रीकृष्ण भारतीय संस्कृति, सभ्यता, राष्ट्रीय अस्मिता और राजधर्म के मूर्तिमन्त प्रतीक थे।

दु:ख का विषय है कि पुराणों ने 'चोर-जार-शिखामणि' के रूप में जिस श्रीकृष्ण का चित्रण किया है, उसका लेशमात्र अनुमोदन अथवा चर्चा महाभारत में कहीं भी नहीं है। यह देश और मानवजाति का कितना बड़ा दुर्भाग्य है कि श्रीकृष्ण का वह विकृत स्वरूप तो घर-घर में प्रचलित हूँ, परन्तु जो महाभारत में वर्णित सहीरूप है, जो राष्ट्र के लिए अक्षय प्रेरणा का स्रोत बन सकता है, उसकी चर्चा ही दुर्लभ है।

महाभारत श्रीकृष्ण का प्रामाणिक जीवन चरित्र है, महर्षि वेदव्यास सारे महाभारत में एकमात्र श्रीकृष्ण को ऐसे व्यक्तित्व के रूप में चित्रित करते हैं, जो न कभी टूटता है, न झुकता है, न पलायन करता है। श्रीकृष्ण न रोते हैं, न पछताते हैं और न कभी जय-पराजय या जीवन-मृत्यु की चिन्ता करते हैं, परन्तु उन्हें अपने पुरुषार्थ, कर्तृत्व और नीतिमत्ता पर पूर्ण विश्वास हैं।

हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्ग जित्वा तु भोक्ष्यसे महीम्।
तस्मात् उत्तिष्ठ कौन्तेय ! युद्धाय कृतनिश्चय।।

श्रीराम ने जिस युग में, जिन परिस्थितियों में समाज का मार्गदर्शन और नेतृत्व किया, वह परिस्थितियाँ उतनी जटिल नहीं थी, जितनी श्रीकृष्ण को विरासत में मिली थीं।

श्रीराम लोकप्रिय, जननायक, राजपुत्र और युवराज थे। उसके सभी भाई, बन्धु, परिवार और प्रजा उसकी ज्येष्ठता और श्रेष्ठता को स्वीकार करते थे। उनके मार्गदर्शक ऋषि और मनीषी थे। समाज मर्यादा के पालन का सम्मान करता था।

परन्तु श्रीकृष्ण को विरासत में सर्वथा प्रतिकूल परिस्थितियाँ मिली थीं। व्यक्ति समष्टि और समाज से बड़ा बन चुका था। सामाजिक मर्यादाओं और वर्जनाओं को तोड़ने में अपनी श्रेष्ठता और शान समझता था।

वे स्वनिर्मित व्यक्ति थे। सभी साधनों और साथियों का समय और सृजन उन्हें स्वयं करना पड़ा। श्रीकृष्ण होश सम्भालने के बाद जीवन के प्रत्येक क्षण में अन्तरात्मा से प्रेरित थे। उनका जीवन एक पहाड़ी नदी के समान है, जो उछलती, कूदती चट्टानों को तोड़ती, दुर्गम उपत्यकाओं में अपना मार्ग स्वयं बनाती और बरसात में अपने कूल-किनारों की मर्यादाओं को भंग करती लगातार आगे बढ़ती जाती है।

श्रीकृष्ण व्यक्तिवादी प्रवृत्तियों और महत्त्वाकांक्षाओं के विरुद्ध विद्रोह का नेतृत्व करते हैं। वह राजपुत्र, युवराज राजपरिवार के सुविधासम्पन्न सदस्य न होकर जेल में बन्द माता-पिता की सन्तान के रूप में एक सामान्य शोषित, पीड़ित, वंचित युवा के रूप में पले बढ़े और शोषित, वंचित, दलित, पीड़ित आतंक के साये में जीने को मजबूर, जन-जन के प्रतिनिधि के रुप में उपस्थित होते हैं।

उनके जीवन का लक्ष्य अधिनायकवादी, प्रवृत्तियों और दलित नागरिकों के अधिकारों की प्राप्ति के लिए संघर्ष करना था। श्रीकृष्ण अपने युग में लोकतन्त्र के प्रथम प्रणेता थे। उन्हें विरासत में ऐसा समाज मिला जिसमें देश के नागरिकों को अभिव्यक्ति के अधिकार की बात तो दूर, अपने खाने-पीने, सोचने, अपने सम्बन्धों को ठीक ढ़ंग से निर्वहन करने का अधिकार नहीं था। प्रजाजनों को अपने खून-पसीने से प्राप्त साधनों के उपयोग व उपभोग करने की स्वतन्त्रता नहीं थी।

गोपालन, दुग्ध उत्पादन और कृषि उनका मुख्य व्यवसाय था। गऊएं पालकर दूध, दही, घी, मक्खन, पनीर आदि प्रजा तैयार करती थी, परन्तु इन उत्पादों के उपभोग और उपयोग पर राजा का नियन्त्रण था।

कंस ने तत्कालीन लोकप्रिय राजा और अपने पिता उग्रसैन को बलात् राजगद्दी से हटाकर, लोकमर्यादा का गला घोंटकर स्वयं शासक बन बैठा। अन्य प्रतिष्ठित नागरिकों को मथुरा से पलायन करने को विवश कर दिया या जेल में डाल दिया, जिसमें श्रीकृष्ण के माता-पिता भी शामिल थे। प्रजा आतंक की छाया में जीवन जीने को विवश थी। नागरिक अधिकार प्रतिबन्धित थे। श्रीकृष्ण, बलराम और सुभद्रा तीनों भाई-बहनों का बचपन अपने माता-पिता से दूर वंचितों के रूप में व्यतीत हुआ।

श्रीकृष्ण ने इस समस्त सामाजिक और राजनैतिक परिवेश के विरुद्ध जनमत तैयार किया। अपने समवयस्क ग्वाल-बाल, बालाओं और गोपालकों के मानस में विद्रोह का बीजारोपण किया। उन्हें उनके मौलिक अधिकारों से परिचित कराया। अपने अधिकारों की प्राप्ति के लिए लड़ना सिखाया।

उसने युवा साथियों को संगठित किया। उन्हें शस्त्र, शास्त्र, व्यायाम और मल्लयुद्ध के लिए प्रेरित किया। युवा शक्ति के मन-मस्तिष्क आत्मा में वीरता के भाव भरे। उन्हें आने वाले कल की समस्याओं से लड़ने के लिए तैयार करते हुए कहा-

पत्थर सी हों मांस पेशियाँ, लोहे से भुजदण्ड अभय।।
नस-नस में हो लहर आग की, तभी जवानी पाती जय।।

श्रीकृष्ण युवा संगठन का स्वयंभू नेता बना, जिसमें सभी सक्षम युवा, गोप-गोपियाँ शामिल थे। सभी युवा सदाचारी, चरित्रवान और संघर्षशील भाई-बहन के रूप में सगठन से जुड़े। उस संगठन का नाम रखा गया 'राधा'। 'राधा' नाम की युवा सेना में 16,000 से अधिक गोप-गोपियाँ शामिल थे, जो श्रीकृष्ण की एक आवाज पर इकट्ठे होकर जीवन अर्पण करने को तैयार थे।

उस संगठन का प्रतीक चिन्ह था-बांसुरी अथवा मुरली। जो श्रीकृष्ण की आवाज बन गई। श्रीकृष्ण ने युवा सेना के सर्वोच्च अधिकारी के रुप में 'राधापति' या सेनापति का पद ग्रहण किया। श्रीकृष्ण ने अपनी सेना 'राधा' के सामने आततायी कंस को चुनौती देते हुए कहा-

ओ मदहोश, बुरा फल है शूरों के शोणित पीने का,
गिन-गिन कर देना होगा मोल, इक-इक बूँद पसीने का।
कल होगा इन्साफ यहाँ, किसने क्या किस्मत पाई है,
अभी नीन्द से जाग रहा युग, यह पहली अंगड़ाई है।

शारीरिक उन्नति से तैयार युवाओं के लिए दुग्ध उत्पादों के मथुरा भेजने पर श्रीकृष्ण ने पूरी पाबन्दी लगा दी। श्रीकृष्ण ने गोपालकों को अपनी गऊओं के दूध, दही, मक्खन, घी अपने पुत्र-पुत्रियों, गोप-गोपियाँ युवा सेना को देने का आह्वान किया।

गोप-गोपियों के माता-पिता, गोपाल कंस के आतंक से आतंकित थे। उन्होंने श्रीकृष्ण की सलाह की अवहेलना की। दूध, दही, घी, मक्खन मथुरा भेजना जारी रखा।

श्रीकृष्ण ने अपने सैनिक गोप और गोपियों को मथुरा जाने वाले दूध, दही, घी, मक्खन को लूटकर खाने का गुप्त आदेश दिया। बलात् जाने वाली दूध, दही की मटकियों को गुलेल से तोड़ने का गुप्त आदेश दिया। उद्दण्ड और उत्श्रृंखल युवा शक्ति की उत्श्रृंखलता, उद्दण्डता

(शेष पृष्ठ 7 पर)

सम्पादकीय

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के पर्व का महत्व

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का पर्व हर वर्ष भाद्रपद अष्टमी को सम्पूर्ण भारतवर्ष में बड़े धूमधाम के साथ मनाया जाता है। भारतवर्ष में ही नहीं सारे विश्व में योगीराज श्रीकृष्ण के बहुत सारे अनुयायी भक्त हैं। जिन्होंने लाखों की संख्या में उनके मन्दिर बना डाले। इतना ही नहीं श्रीकृष्ण को साक्षात् ईश्वर का अवतार मानकर उपासना में जुट गए। परन्तु श्रीकृष्ण के शुद्ध स्वरूप को जानने का कभी प्रयास नहीं किया। श्रीकृष्ण के आदर्श चरित्र का मजाक बनाकर उन्हें भोगी, विषयी और चोर बना दिया। इतने प्रभावशाली, नरवीर, रणवीर, कर्मबली, जितेन्द्रिय, संयम, सदाचार के दृढ़ व्रतधारी सम्पूर्ण गुणों से युक्त महापुरूष के जीवन को समाज के सामने कुत्सित रूप में पेश किया गया।

कारावास में जन्म, बाल्यकाल में गोकुल में नन्द के घर गवालों में रमण करने वाले, दूध, दहीं, मक्खन खाने वाले, गौएं चराने वाले, मल्लयुद्ध कसरत करने वाले, अपनी शक्ति से बड़े-बड़े खल दुष्टों को धराशायी करने वाले वीर पुरूष थे। बड़े होने पर अपने अत्याचारी मामा कंस को पछाड़ा, माता को कारावास से छुड़ा कर अपना कर्त्तव्य पालन कर माता पिता का ऋण अदा किया। वेदवेत्ता आचार्य सान्दीपन गुरू के आश्रम में विधिपूर्वक विद्या प्राप्त की। थोड़े समय में ही ज्ञानवान एवं राज्यनीति निपुण होकर, अपने कष्टों तथा विघ्न बाधाओं को सहन करते हुए आगे बढ़ते रहे।

योगीराज श्रीकृष्ण कभी नहीं चाहते थे कि महाभारत का युद्ध हो, परन्तु पापों का घड़ा फूटे बिना नहीं रहता। वैसा ही हुआ। अन्त में सारी संस्कृति के वेदवेत्ता महापुरूषों एवं वीरों का नाश देखना पड़ा। युद्ध भूमि में अर्जुन के हताश होने पर उसे आत्मा की अमरता का उपदेश दिया। रणभूमि में वास्तविक उपनिषद का तत्व दिखाया। कर्मयोग, ज्ञानयोग, भक्तियोग आदि आर्ष ग्रन्थों का निचोड़ दिखाया। जो आज वर्तमान में भी गीता उपदेश के रूप में मौजूद है। ऐसे महापुरूष योगीराज श्रीकृष्ण कहलाए।

आज समाज में जिस प्रकार से श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के पर्व को मनाया जाता है उसे देखकर शर्म आती है कि क्या हमारे आदर्श योगेश्वर श्रीकृष्ण ऐसे थे? लोगों के मन में श्रीकृष्ण के प्रति जो भ्रान्तियां हैं उन भ्रान्तियों ने उनके मन-मस्तिष्क को कलुषित कर दिया है। आज श्रीकृष्ण के तरह-तरह के स्वांग रचकर उन्हें पुराणों के अनुसार समाज में पेश किया जाता है। एक ऐसे योगी को जिसने सम्पूर्ण जीवन में धर्म की मर्यादाओं का पालन किया, उनका सारा जीवन निष्कलंक रहा। ऐसे महापुरूष को हमने क्या बना डाला इस पर चिन्तन करने की आवश्यकता है। हिन्दू समाज ने जितना अन्याय श्रीकृष्ण के उज्जवल और निष्कलंक जीवन के साथ किया है उतना कोई भी समुदाय अपने महापुरूष के साथ नहीं करता। जिस चरित्र पर हमें गर्व करना चाहिए था, लोगों को प्रेरणा देनी चाहिए थी उस स्वरूप को हमने लुप्त कर दिया है और जिस पर हमें शर्म आनी चाहिए थी उसे हमें जनता में बढ़ा-चढ़ा कर पेश किया। श्रीकृष्ण के वास्तविक जीवन से हमारी दृष्टि ओझल हो गई और पुराणों में वर्णित मनघडन्त बातों पर हमने विश्वास कर लिया। हमें विचार करना चाहिए कि हम किस दिशा में जा रहे हैं। अगर इसी प्रकार हम अपने महापुरूषों के जीवन के साथ खिलवाड़ करते गए तो एक दिन ऐसा आएगा जब हमें गर्व करने लायक कोई भी महापुरूष दिखाई नहीं देगा। श्रीकृष्ण की सच्ची भक्ति यही है कि हम उनके जीवन चरित्र को याद कर स्वयं अपना जीवन उसी सांचे में ढ़ाले। केवल राधे-राधे कहने से हमारा कल्याण नहीं होगा। अगर हम श्रीकृष्ण जैसा बनना चाहते हैं तो हमें भी उनके जीवन के श्रेष्ठ गुणों को जीवन में धारण करना पड़ेगा।

आज समाज में श्रीकृष्ण के जिस स्वरूप को पेश किया जाता है , क्या उस स्वरूप जैसा कोई बनना चाहेगा। क्या कोई अपने आपको चोर कहलाना चाहता है, क्या कोई विषयी, नहाती हुईस्त्रियों के वस्त्र चुराना, भोगी और लम्पट, कहलाकर खुश हो सकता है? अगर हम स्वयं को ऐसा नहीं बनाना चाहते हैं तो एक ऐसे जीवन के ऊपर जिसे हम अपना आदर्श मानते हैं, उसके ऊपर ऐसे घिनौने कृत्य करने का साहस कैसे कर सकते हैं? श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के पर्व पर हम श्रीकृष्ण के शुद्ध स्वरूप को जानने का प्रयास करें जैसा महाभारत में वर्णित किया गया है। जिस स्वरूप का देव दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश में वर्णन किया है। हम भी उसी रूप में श्रीकृष्ण को जाने और मानें। तभी हम इस पर्व को मनाकर सार्थक कर सकते हैं। योगीराज श्रीकृष्ण का सारा जीवन समन्वय की अटूट शृंखला है। उनके उदात्त संदेश में ज्ञान, कर्म और भक्ति का सामंजस्य है। समत्वं योग उच्यते- सन्तुलन को उन्होंने योग की संज्ञा दी है। श्रीकृष्ण ने हमें उन दुरितों से बचने को कहा है जो परनिन्दा, परदोष दर्शन, द्वेष तथा विभेदात्मक प्रवृत्तियों से उत्पन्न होते हैं। उन्होंने गीता में आत्मा के अमरत्व का शाश्वत उद्घोष कर जीवन को दैवी सम्पदा से संयुक्त किया। जय, पराजय, हानि, लाभ, सुख-दुःख, निन्दा-स्तुति, शीत-उष्ण आदि द्वन्द्वों से अनासक्त रहकर स्वस्ति पथ का पथिक बनने की गरिमा उनके जीवन से प्राप्त होती है। महाभारत में उनकी कूटनीति का अद्भुत वर्णन करते हुए शुक्रनीति में लिखा है कि-

न कूटनीतिरभवत् श्री कृष्ण सदृशो नृपः

अर्थात् आज तक पृथ्वी पर श्रीकृष्ण के समान कूटनीतिज्ञ राजा नहीं हुआ। पाण्ड़वों का सम्पूर्ण राजनीति चक्र उनके हाथ में था। उन्हीं की कूटनीति से भीष्मपितामह, आचार्य द्रोण, जयद्रथ, कर्ण, दुर्योधन आदि का वध सम्भव हुआ। यदि श्रीकृष्ण पाण्ड़वों के पक्ष में न होते तो महाभारत युद्ध का रूप कुछ और ही होता। अर्जुन ने तो अपना गाण्डीव धनुष फैंक ही दिया था। श्रीकृष्ण ने हताश और निराश अर्जुन को ऐसा विचार दिया कि अर्जुन युद्ध के लिए तैयार हो गया। योगीराज श्रीकृष्ण जी महाराज का सम्पूर्ण जीवन आदर्श और मर्यादाओं का प्रतीक है। गीता के द्वारा श्रीकृष्ण महाराज ने कर्म सिद्धान्त का जो उपदेश दिया उसे धारण करके मनुष्य का जीवन सफल हो सकता है। ऐसे आदर्श चरित्र, मानवता के पथ प्रदर्शक, चरित्रनायक के जिस स्वरूप को आज समाज के समक्ष प्रस्तुत किया जाता है, जिस स्वरूप की झांकियां निकाल कर लोग तालियां बजाते हैं उसे देखकर लगता है कि हम वास्तव में श्रीकृष्ण को जानते ही नहीं है। श्रीकृष्ण जैसा तेजस्वी, संयमी महापुरूष जिन्होंने गृहस्थ में रहते हुए भी 12 वर्ष तक ब्रह्मचर्य के व्रत को धारण किया था ऐसे महापुरूष के चरित्र के साथ वास्तव में अन्याय हुआ है। श्रीकृष्ण के जिस प्रेरक स्वरूप को अपनाकर हम मार्गदर्शन प्राप्त कर सकते हैं उसी आदर्श स्वरूप को भुलाकर हमने बहुत भूल कर दी है जिसके लिए आने वाली पीढ़ियां कभी क्षमा नहीं करेंगी। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने श्रीकृष्ण को आप्त पुरूष कहा है जिसने जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त कोई भी बुरा कार्य नहीं किया।

श्रीकृष्ण जैसा संयमी, योगी, राजनीतिज्ञ, ईश्वरभक्त, कर्मनिष्ठ, धैर्यशील महापुरूष आज तक इस संसार में पैदा नहीं हुआ है। 3 सितम्बर को जन्माष्टमी का पर्व मनाते हुए हमें श्रीकृष्ण के उसी स्वरूप को जनमानस के समक्ष प्रस्तुत करना चाहिए। श्रीकृष्ण के बारे में जो भ्रांतियां जनमानस में भरी हुई हैं उन भ्रान्तियों का निराकरण करके उनके शुद्ध और प्रेरक स्वरूप को लोगों के सामने प्रस्तुत करना होगा। श्रीकृष्ण हमारी संस्कृति के प्रतीक हैं जिनका सम्पूर्ण जीवन त्याग और आदर्श का प्रतीक रहा है। ऐसे निष्काम कर्मी का अगर हम सही स्वरूप लोगों के सामने पेश करते हैं तो जन्माष्टमी का पर्व मनाना सार्थक होगा।

-प्रेम भारद्वाज
सम्पादक एवं सभा महामंत्री

श्रीकृष्णजी का अनुपम व्यक्तित्व

ले०-महात्मा चैतन्यमुनि, तहसील सुन्दरनगर, मण्डी (हि०प्र०)

संसार के इतिहास में अनेकों ही महापुरूष हुए हैं मगर योगेश्वर श्री कृष्ण जैसा बहुआयामी व्यक्तित्व कहीं भी दिखाई नहीं देता है। यही कारण है कि श्रीकृष्ण जी न केवल भारतवर्ष में बल्कि समूचे विश्व में पूजनीय व आदरणीय हैं। वे आप्त पुरूष थे, जनक्रान्ति के अग्रदूत थे, परमात्मा के अनन्य भक्त तथा महान् योगी थे, निर्भीक थे, त्यागी और तपस्वी थे, उनका व्यक्तित्व शालीनता से परिपूर्ण था, मैत्री भाव उनमें कूट-कूट कर भरा हुआ था, वे अद्भुत् नीतिवान, सदाचारी, निर्लोभी, नैतिकता से ओत-प्रोत तथा बलवान-योद्धा एवं युगपुरूष थे। महाभारत युद्ध को रोकने का उन्होंने भरसक प्रयास किया मगर दुर्योधन की कुटिलता व हठधर्मिता के कारण वे उसमें सफल नहीं हो सके। जब युद्ध अनिवार्य हो गया तो धर्म की विजय तथा अधर्मियों का नाश करने के लिए वे कटिवद्ध हो गए। युद्ध की पूरी तैयारियां हो गई तथा जब दोनों सेनाएं कुरूक्षेत्र के मैदान में आमने-सामने खड़ी हो गई तो उनके सामने एक बहुत ही विकट स्थिति आ उपस्थित हुई। पाण्डव पक्ष का अतुलनीय वीर अर्जुन मोहग्रस्त होकर युद्ध से ही उपराम हो गया।

अर्जुन श्रीकृष्ण जी को तर्क देता है कि वह इन अपनों की हत्या नहीं करेगा, उसे भीख मांगकर निर्वाह करना स्वीकार्य है, यदि उस शस्त्ररहित को कौरव पक्ष वाले मार भी दें तो भी वह प्रतिकार नहीं करेगा, हे केशव! युद्ध के लिए तत्पर इन अपने ही बन्धु-बान्धवों को देखकर मेरा मुंह सूख रहा है, मैं पसीना-पसीना हो रहा हूँ, मेरे हाथ से गाण्डीव छूट रहा है... ऐसा कहकर अर्जुन अपने गाण्डीव को एक ओर रख कर रथ के पिछले भाग में जाकर बैठ जाता है। अर्जुन उस युद्ध की एक बहुत ही अधिक महत्वपूर्ण कड़ी था, उसकी ऐसी अवस्था देखकर महाभारत युद्ध के सूत्रधार श्रीकृष्ण महाराज जी की अपनी स्थिति कैसी रही होगी इसकी कल्पना करना कठिन नहीं है। ऐसी विकट परिस्थिति में भी योगीराज विचलित नहीं हुए तथा अर्जुन को गीता के रूप में ऐसा अद्भुत् उपदेश दिया कि अर्जुन मोहरहित होकर युद्ध के लिए कटिबद्ध हो गया। गीता का यह ज्ञान आज भी जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में विमोहित व्यक्ति पर संजीवनी बनकर अपना कार्य कर रहा है। गीता का निष्काम कर्म वास्तव में ही एक अद्भुत् तकनीक है जिसके कार्यान्वयन से व्यक्ति अपने इहलोक तथा परलोक को सहजता से संवार सकता है।

ऐसे महान् पराक्रमी, ईश्वर-भक्त तथा आत्मवेता के बारे में जब कुछ लोग अनेक प्रकार के आक्षेप लगाते हैं तो अत्यधिक दु:ख एवं आश्चर्य होता है। क्या इस प्रकार के नीतिवान, बलवान, योगी तथा सर्वगुण सम्पन्न व्यक्तित्व को माखनचोर, गोपियों के साथ रंगरलियां करने वाला, उन्हें नग्न देखने के लिए उनके वस्त्र चुराने वाला, राधा तथा कुब्जा आदि अन्य अनेक महिलाओं का चरित्र हनन करने वाला, कामी तथा शठी आदि कहना युक्तियुक्त है ? यदि श्रीकृष्ण जी वास्तव में ही ऐसे थे तो फिर उनका गुणगान करके हम अपनी सन्तान को क्या शिक्षा देना चाहते हैं? क्या इस प्रकार से अपने महापुरूषों को अपमानित करना श्रेयस्कर है ? वास्तव में श्रीकृष्ण जी का जीवन जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त बहुत उज्वल व अनुकरणीय रहा है।

इस प्रकार की किंवदन्तियों और मिथ्यारोपों के कारण कुछ लोगों के लिए उनका व्यक्तित्व विवादास्पद बन गया है मगर हम पुराणों की कल्पनाओं को एक ओर रख कर यदि महाभारत तथा उसी के एक भाग गीता के श्री कृष्ण पर दृष्टि डालें तो वे न केवल शारीरिक बल में ही बल्कि आध्यात्मिकता में भी अतुलनीय दिखाई देते हैं। आर्य समाज श्री कृष्ण जी के इसी रूप को मानता है तथा उन्हें इसी रूप में मानना भी चाहिए क्योंकि वास्तविकता यही है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी उनके बारे में अपने अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थप्रकाश' के ग्याहरवें समुल्लास में लिखते हैं- 'देखो श्रीकृष्णचन्द्र का इतिहास महाभारत में अत्यत्तुम है। उनका गुण, कर्म, स्वभाव और चरित्र आप्त पुरूषों के सदृश्य है जिसमें कोई अधर्म का आचरण श्रीकृष्ण जी ने जन्म से मरण पर्यन्त कुछ बुरा काम किया हो ऐसा नहीं लिखा।' महर्षि दयानन्द जी को ये शब्द इसलिए लिखने पड़े क्योंकि श्रीकृष्ण जी के बारे में विधर्मियों ने ही नहीं बल्कि उनके अनुयायियों ने भी इस प्रकार के मिथ्यारोप लगाए हैं कि शर्म का माथा भी शर्म से झुक जाता है। ऐसे आप्त पुरूष और महान चिन्तक एवं योगीराज को चोर, जार और अनेक प्रकार के कुटिलतायुक्त व्यवहार करने वाला कहना वास्तव में उनका घोर अपमान करना है।

श्रीकृष्ण जी महाराजा यायाति के कुल में पैदा हुए थे। महाराज यायाति जी के पूर्वज राजाओं के कुछ नाम इस प्रकार मिलते हैं-अग्नि का पुत्र चन्द्र, चन्द्र का पुत्र बुध, बुध का पुत्र इला,इला का पुत्र पुरूरवा, पुरूरवा का पुत्र आयु,आयु का पुत्र नहुष और नहुष के पुत्र का नाम ही यायाति था। महाराजा ययाति की दो रानियां थीं- शर्मिष्ठा और देवयानी। शर्मिष्ठा से द्रुह्य, अनु और पुरू नाम के तीन पुत्र तथा देवयानी के यदु और तुर्वथु नाम के दो पुत्र उत्पन्न हुए थे। देवयानी के पुत्र यदु के कुल में ही आगे चलकर श्री कृष्ण जी का जन्म हुआ इसलिए वे यदुवंशी थे।

इनके पिता जी का नाम वासुदेव तथा माता का नाम देवकी था। उन दिनों अत्याचारी कंस का राज्य था जिसने श्री कृष्ण जी को पैदा होते ही मरवाने का षडयन्त्र रच रखा था क्योंकि उसके मन में इस बात का भय गहराई से बैठ गया था कि देवकी के आठवें गर्भ से जो सन्तान पैदा होगी वह कंस का नाश करेगी। इसलिए देवकी के गर्भ ठहरने का ज्यों ही उसे पता चलता था वह उस पर पूरी निगरानी रखता था और देवकी की सन्तान को पैदा होते ही मरवा दिया करता था। श्रीकृष्ण जी जब देवकी के गर्भ में थे तो उस समय भी कंस ने वासुदेव व देवकी को कारागार में डाल रखा था मगर पैदा होते ही नवजात शिशु श्री कृष्ण जी को कंस की आंखों में धूल झोंककर जैसे-तैसे मथुरा से नन्द गोप के यहां गोकुल पहुंचा दिया गया तथा वहीं पर ही उनका पालन पोषण हुआ।

स्वयं उन्हीं के द्वारा की गई घोषणा के अनुसार अधर्म का नाश करना और धर्म की स्थापना करना ही उनके जीवन का लक्ष्य रहा। उन्हें गोकुल में सकुशल पहुंचा तो दिया गया था मगर कंस ने वहां पर भी उन्हें समाप्त कराने के प्रयास किए यह अलग बात है कि उसे इसमें सफलता नहीं मिली। युवावस्था तक पंहुचते-पंहुचते श्रीकृष्ण जी ने न केवल पूतना, वत्सासुर, बकासुर और अघासुर आदि का काम तमाम किया बल्कि जब वृन्दावन वासियों पर अतिवृष्टि का प्रकोप आया तो अपने साथियों के सहयोग से उन्होंने सात दिनों तक सबके ठहरने तथा भोजनादि की व्यवस्था गोवर्धन पर्वत पर करके अपनी कार्यकुशलता का परिचय दिया। श्रीकृष्ण तथा बलराम जी ने सान्दीपनी मुनि जी के गुरूकुल में शिक्षा ग्रहण की थी। इधर कंस को निरन्तर श्रीकृष्ण जी द्वारा किए गए साहसिक कार्यों की सूचना मिलती रहती थी तथा वह उनके इन कार्यों से और अधिक भयभीत होता रहता था।

अन्तत: उसने उन्हें समाप्त करने के लिए एक योजना के तहत धनुष-यज्ञ का आयोजन किया और उसमें श्रीकृष्ण व बलराम को भी आमन्त्रित किया। जब वे दोनों भाई वहां पंहुचे तो कंस ने उन्हें समाप्त करने के लिए महाबलशाली कुलवयापीड नामक हाथी को छोड़ा। श्रीकृष्ण जी ने देखते-देखते ही उसको मार गिराया तथा धनुष तोड़कर अपनी शक्ति का परिचय दिया। अब तो कंस बहुत अधिक घबरा गया तथा उसने चाणुर और मुष्टिक नाम के दो पहलवानों को उन्हें मारने के लिए छोड़ा। देखते

(शेष पृष्ठ 7 पर)

श्री कृष्ण का पवित्र और महान जीवन चरित

ले०-कृष्ण चन्द्र गर्ग, 831 सैक्टर 10, पंचकूला, हरियाणा

श्री कृष्ण महाभारत के सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण पात्र थे। महाभारत का युद्ध द्वापर युग के अन्त में अब से लगभग 5200 वर्ष पूर्व हुआ। श्री कृष्ण के जीवन चरित का प्रमाणिक स्रोत महाभारत की पुस्तक ही है। महाभारत के अनुसार श्री कृष्ण का जीवन बड़ा पवित्र और महान था। उन्होंने जन्म से मृत्यु तक कोई भी बुरा काम किया हो-ऐसा नहीं लिखा।

महाभारत के अनुसार श्री कृष्ण की एक पत्नी थी-रुक्मिणी। विवाह के बाद श्री कृष्ण ने अपनी पत्नी रुक्मिणी के साथ 12 वर्ष तक हिमालय पर्वत पर रहकर ब्रह्मचर्य का पालन किया। उसके पश्चात उनके यहां एक पुत्र उत्पन्न हुआ जिसका नाम प्रद्युम्न रखा गया। प्रद्युम्न बड़ा होकर हू बहू अपने पिता श्री कृष्ण जैसा ही दीखता था।

महाभारत में राधा नाम की किसी स्त्री का कोई जिक्र नहीं है।

राजसूय यज्ञ (महाभारत के युद्ध के पहले की अवस्था है)-पाण्डवों के राज्य का तेज सभी जगह पहुँच चुका था। प्रजा सुखी थी। सभी राजे-महाराजे उनका सिक्का मानते थे। तब युधिष्ठिर ने महाराजाधिराज (चक्रवर्ती सम्राट) की उपाधि पाने के लिए राजसूय यज्ञ की ठानी। इसके सम्बन्ध में उसने अपने मन्त्रियों और भाईयों को बुलाकर पूछा-क्या मैं राजसूय यज्ञ कर सकता हूँ? सबने जवाब दिया-हां, अवश्य कर सकते हैं, आप इसके योग्य पात्र हैं। व्यास आदि ऋषियों से यही प्रश्न किया। उन सबने भी हां में ही उत्तर दिया। परन्तु युधिष्ठिर को श्री कृष्ण से सम्मति लिए बिना तसल्ली न हुई। उन्होंने श्री कृष्ण से कहा-हे कृष्ण! कोई तो मित्रता के कारण मेरे दोष नहीं बताता, कोई स्वार्थवश मीठी-मीठी बातें करता है। पृथ्वी पर ऐसे लोग ही अधिक हैं। उनकी सम्मति से कोई काम नहीं किया जा सकता। आप इन दोषों से रहित हैं। इसलिए आप ही मुझे ठीक-ठीक सलाह दें। तब श्री कृष्ण बोले-महान पराक्रमी जरासन्ध के जीते जी आपका राजसूय यज्ञ पूरा न होगा। उसको हराने के बाद ही यह महान कार्य सफल हो सकेगा।

जरासन्ध वध-जरासन्ध बड़े विशाल और वैभवशाली राज्य मगध का राजा था। वह बड़ा क्रूर और अत्याचारी था। उसने अपने यहां 86 राजाओं को बन्दी बना रखा था और यह ऐलान कर रखा था कि जब इनकी संख्या 100 हो जाएगी वह इन सबकी बलि चढ़ा देगा। यह अत्याचार श्री कृष्ण को सहन नहीं था। इसी कारण से वे उसे समाप्त करना चाहते थे। जरासन्ध का जन, धन, बल इतना अधिक था कि रणक्षेत्र में उसे हराना असम्भव था। श्री कृष्ण ने नीति से जरासन्ध का भीम से युद्ध करवा दिया जिसमें जरासन्ध मारा गया। तब श्री कृष्ण ने सभी बन्दी राजाओं को मुक्त कर दिया और जरासन्ध के पुत्र सहदेव को मगध का राजा बना दिया।

प्रथम अर्घ्य (पहला सम्मान)-राजसूय यज्ञ आरम्भ होने पर भीष्म पितामह ने युधिष्ठिर से कहा कि उपस्थित राजाओं में जो सबसे श्रेष्ठ है उसे ही प्रथम अर्घ्य देना चाहिए। युधिष्ठिर ने भीष्म से ही पूछ लिया कि ऐसा व्यक्ति कौन है जो पहले अर्घ्य पाने का पात्र है। इस पर भीष्म ने कहा-जैसे चमकने वाले सभी तारों में सूर्य सबसे अधिक प्रकाशमान है वैसे ही इन सब राजाओं में श्री कृष्ण तेज, बल, पराक्रम में सबसे अधिक हैं। इसलिए वे ही प्रथम अर्घ्य पाने के योग्य हैं। तब युधिष्ठिर की आज्ञा पाकर सहदेव ने श्री कृष्ण को प्रथम अर्घ्य दिया।

सन्धि का प्रस्ताव-पाण्डवों ने 12 वर्ष वन में बिताने के बाद 13वां वर्ष अज्ञातवास में बिताया। फिर कौरवों से अपना राज्य मांगा। जब कौरवों ने राज्य देने से इन्कार कर दिया तब पाण्डवों ने युद्ध का निश्चय कर लिया। अन्तिम कोशिश के तौर पर श्री कृष्ण कौरवों के पास जाने को तैयार हुए। सबने उनको रोका कि कौरव मानने वाले नहीं हैं। तब श्री कृष्ण ने कहा कि संसार में कार्य सिद्ध के दो आधार होते हैं-एक मनुष्य का पुरुषार्थ, दूसरा ईश्वर इच्छा। मैं पुरुषार्थ तो कर सकता हूँ, ईश्वर इच्छा मेरे अधीन नहीं है। इसलिए फल मैं नहीं जानता। मैं इतना जानता हूँ कि मुझे शक्तिभर प्रयास कर लेना चाहिए।

हस्तिनापुर पहुँचने पर महात्मा विदुर ने श्री कृष्ण से कहा कि दुर्योधन मानने वाला नहीं है। अत: आप सन्धि का प्रयत्न छोड़ दें। तब श्री कृष्ण ने कहा-सारी पृथ्वी खून से लथपथ होती देख रहा नहीं जाता। और यह भी कहा-आपत्ति में पड़े अपने व्यक्ति को बालों से पकड़कर भी खींचने का यत्न करे फिर मनुष्य निन्दा का पात्र नहीं होता।

श्री कृष्ण ने सन्धि के लिए दुर्योधन, धृतराष्ट्र, कर्ण से बात की, उन्हें समझाने का प्रयास किया। परन्तु सफलता न मिली। इस दौरान दुर्योधन ने उन्हें अपने यहां भोजन करने के लिए कहा। तब श्री कृष्ण बोले-राजन्! किसी के घर का अन्न दो कारणों से खाया जाता है-या तो प्रेम के कारण या आपत्ति पड़ने पर। प्रीति तो तुम में नहीं है और संकट में हम नहीं है।

यजुर्वेद कर मन्त्र है-

यत्र ब्रह्म च क्षत्रं च सम्यञ्चौ चरत: सह।
तं लोकं पुण्यं प्रज्ञेषं यत्र देवा: सहाग्निना।।

इस वेद मन्त्र में बताया गया है कि सुखी और उन्नत जीवन के लिए दो गुणों की आवश्यकता है-एक विद्वता और दूसरा बल। श्री कृष्ण में ये दोनों गुण विद्यमान थे। उनकी बुद्धिमता और नीति के कारण ही कम शक्ति के होते हुए भी महाभारत के युद्ध में पाण्डवों ने विजय प्राप्त की और शक्तिशाली, अत्याचारी राजा जरासन्ध को मार गिराया। श्री कृष्ण ने शारीरिक बल के सहारे ही अत्याचारी राजा कंस को यमलोक पहुँचा दिया और घमण्डी शिशुपाल का वध कर दिया।

गीता में श्री कृष्ण ने योग की परिभाषा ऐसे की है-योग: कर्मसु कौशलम्। अर्थात कार्य को कुशलता पूर्वक करना योग है। इस दृष्टि से श्री कृष्ण पूर्ण योगी थे क्योंकि उन्होंने जो भी काम किए उनमें अपनी बुद्धि बल और नीति से सफलता प्राप्त की।

महाभारत के युद्ध में जब अर्जुन और कर्ण के बीच लड़ाई हो रही थी तब कर्ण के रथ का पहिया पृथ्वी में धंस गया और वह उसे निकालने के लिए रथ से नीचे उतरा। तब कर्ण ने अर्जुन को लड़ाई के धर्म की दुहाई दी और वह चिल्लाया कि निहत्थे पर वार करना धर्म नहीं है। इस पर श्री कृष्ण बोले-अरे कर्ण! अब धर्म-धर्म चिल्लाता है। परन्तु-

1. जिस समय तुम, दुशासन, शकुनि और सौबल सब मिलकर ऋतुमती द्रौपदी को घसीट लाए थे, उस समय तुम्हें धर्म की याद न आई।

2. जब तुम बहुत से महारथियों ने मिलकर अकेले अभिमन्यु को घेरकर मार डाला था, उस समय तुम्हारा धर्म कहां गया था।

3. जब 13 वर्ष के बनवास के बाद पाण्डवों ने अपना राज्य मांगा और तुमने नहीं दिया, तब तुम्हारा धर्म कहां गया था।

4. जब तुम्हारी सम्मति से दुर्योधन ने भीम को विष खिलाकर नदी में डाल दिया था, तब तुम्हारा धर्म कहां गया था।

5. जब वारणावत नगर में लाख के घर में तुमने सोते हुए पाण्डवों को जलाने का प्रयत्न किया था, तब तुम्हारा धर्म कहां गया था।

कर्ण को इतना कहकर श्री कृष्ण ने अर्जुन से कहा कि इस प्रकार दलदल में फंसे कर्ण का वध करना पुण्य है, पाप नहीं। दूसरे ही क्षण कर्ण अर्जुन के वाण से जख्मी होकर गिर गया। यह थी श्री कृष्ण की नीतिमत्ता।

श्री कृष्ण को पाण्डवों द्वारा कौरवों के साथ जुआ खेलना, जूए में सब कुछ हार जाना और वन में चले जाना-इन सब बातों का पता तब चला जब पाण्डव वन में रह रहे थे। श्री कृष्ण वन में पाण्डवों से मिलने गए। वहां जाकर उन्होंने कहा कि यदि मैं द्वारिका में होता तो हस्तिनापुर अवश्य आता और जूए के बहुत से दोष बताकर जुआ न होने देता। ऐसा था श्री कृष्ण का नैतिक बल और आत्मविश्वास। दूसरी ओर भीष्म पितामह, द्रोणाचार्य, कृपाचार्य, धृतराष्ट्र आदि बड़े लोग जुआ और जूए से जुड़े अन्य दुष्कर्म अपनी आँखों के सामने देखते रहे, पर उनमें से किसी में भी उसे रोकने का साहस न हुआ।

ईश्वर के उपासक—श्री कृष्ण

लेखक:-श्री सुरेश शास्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, कार्यालय जालन्धर

योगीराज श्रीकृष्ण एक सच्चे ईश्वर के उपासक थे। प्रतिदिन नियम से संध्या, उपासना आदि कर्म किया करते थे। जो लोग श्रीकृष्ण को ईश्वर का अवतार मानकर उनकी मूर्ति बनाकर, तरह-तरह की अनर्गल बातें जोड़ कर व्यर्थ प्रलाप करते हैं, उन्हें गीता और महाभारत का अच्छी तरह से अध्ययन करना चाहिए। भागवतपुराण के आधार पर उनके साथ असम्भव बातें जोड़कर उनके उज्जवल और आदर्श चरित्र को विकृत करने का प्रयास किया गया। इस लेख में गीता, महाभारत के प्रमाणों के आधार पर यह बतलाने का प्रयास किया गया है कि श्रीकृष्ण स्वयं ईश्वर के सच्चे उपासक थे। आस्तिक और प्रभुभक्त श्री कृष्ण सायं प्रात: नियत समय पर सन्ध्या और अग्निहोत्र किया करते थे। संध्या काल में सब कामों को छोड़कर ईश्वर का ध्यान करते थे, जिसका प्रमाण हमें महाभारत में देखने को मिलता है। पाण्ड़व तेरह वर्ष का वनवास समाप्त करके जब वापिस आए तो श्री कृष्ण पाण्ड़वों के दूत बनकर दुर्योधन को समझा बुझाकर सन्मार्ग पर लाने और पाण्ड़वों को उनका न्याय भाग दिलाने के हस्तिनापुर के लिए चले। मार्ग में सायंकाल हो गया। उस समय श्रीकृष्ण ने रथ को रोक कर संध्योपासना की, जिसका प्रमाण महाभारत का यह श्लोक है-

अवतीर्य रथात्तूर्ण कृत्वा शौचं यथाविधि।
रथ प्रमोचनमादिश्य सन्ध्यामुप विवेश ह।।

अर्थात् रथ से शीघ्र उतरकर और विधिवत् शौच कर्म से निवृत्त होकर तथा रथ को खोलने का आदेश देकर सन्ध्योपासना में बैठे। इस प्रकार महाभारत को पढ़ने से ज्ञात होता है कि श्री कृष्ण प्रभु के भक्त थे, नित्य प्रति सन्ध्या वन्दना किया करते थे। जो लोग उन्हें परमात्मा का अवतार मानते हैं उन्होंने कभी श्री कृष्ण के सच्चे स्वरूप को जानने का प्रयत्न नहीं किया।

गीता में अर्जुन के समक्ष परमपिता परमात्मा के ध्यान की रीति का वर्णन करते हुए श्री कृष्ण वेदानुमोदित उपासना विधि को छठे अध्याय के 11,12,13 वें श्लोक में कहते हैं-

शुचौ देशे प्रतिष्ठाप्य स्थिरमास-
नमात्मन:।
नात्युच्छ्रितं नाति नीचं
चैलाजिनकुशोत्तरम्।।
तत्रैकाग्रं मन: कृत्वा यतचित्ते-
न्द्रियक्रिय:।
उपविश्यासने युञ्ज्याद्योग मात्म-
विशुद्धये।।
समं कायशिरोग्रीवं धारयन्नचलं
स्थिर:।
संप्रेक्ष्य नासिकाग्रं स्वं दिशश्चान
वलोकयन्।।

अर्थात् स्वच्छ स्थान पर अपना स्थिर आसन बिछाकर, ऐसी जगह जो न अधिक ऊँची हो, न अधिक नीची हो और आसन पर पहले कुशा, फिर मृगछाला और उस पर वस्त्र बिछाकर, वहां मन को एकाग्र कर चित्त और इन्द्रिय की क्रियाओं को रोककर, आसन पर बैठकर आत्म शुद्धि अर्थात् अन्त:करण या मन की शुद्धि के लिए योग में जुट जाएं। अपनी पीठ, सिर और गर्दन को सीधा अर्थात् एक सीध में तथा अचल रखकर स्थिर होते हुए, नासिका के अग्रभाग पर दृष्टि जमाकर, अन्य किसी दिशा में न देखता हुआ योग का अनुष्ठान अर्थात् प्रभु का चिन्तन करें।

उपास्य और उपासक में भेद होता है। उपास्य सर्वगुण सम्पन्न होता है और उपासक सीमित शक्ति वाला होता है। उपासक के अन्दर उपास्य के द्वारा ही दिव्य गुण और अलौकिक प्रतिभा आती है। श्री कृष्ण का नियमित रूप से सन्ध्यानुष्ठान और प्रभु का चिन्तन करना उनके उपासक होने का प्रबल प्रमाण है। परन्तु प्रश्न यह है कि श्री कृष्ण योगावस्था में अहर्निश जिस परमात्मा का ध्यान लगाया करते थे उसका स्वरूप क्या है। गीता में अर्जुन को उपदेश देते हुए आठवें अध्याय के 9,10 वें श्लोक में श्रीकृष्ण महाराज कहते हैं-

कविं पुराणमनु शासिता
रमणोरणीयांसमनुस्मरेद्य:।
सर्वस्य धातारमचिन्त्यरूप
मादित्यवर्णं तमस: परस्तात्।।
प्रयाणकाले मनसाऽचलेन
भक्त्या युक्तो योगबलेन चैव।
भ्रुवोर्मध्ये प्राणमावेश्य सम्यक्
स तं परं पुरूषमुपैति दिव्यम्।।

अर्थात् जो व्यक्ति इस संसार से प्रस्थान के समय अचल मन से, भक्ति से सराबोर होकर और योग बल से भृकुटी के बीच में अच्छी तरह प्राण को स्थापित करके उस क्रान्त द्रष्टा, पुरातन, नियन्ता, अणु से भी अणु, सबके धारक और पालक, अचिन्त्य, सूर्य के समान तेजस्वी, अन्धकार से परे प्रकाश स्वरूप परब्रह्म का स्मरण करता है वह उस प्रकाश स्वरूप दिव्य परम पुरूष को प्राप्त होता है। अगले श्लोक में श्री कृष्ण महाराज कहते हैं-

यदक्षरं वेदविदो वदन्ति विशन्ति
यद्यतयो वीतराग:।
यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्यं चरन्ति तत्ते
पदं संग्रहेण प्रवक्ष्ये।।

अर्थात् वेदों के ज्ञाता जिस परब्रह्म को अक्षर नाम से पुकारते हैं, वीतराग यति लोग जिसका ध्यान लगाते हैं, ब्रह्मचारी जिसकी इच्छा के लिए ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करते हैं, उस ओंकार पद के मैं तेरे लिए संक्षेप में वर्णन करूंगा।

इससे स्पष्टत: सिद्ध होता है कि महाराज श्री कृष्ण अन्य वेदानुयायी ऋषि मुनियों के समान परमात्मा के मुख्य और निज नाम ओ३म् का ही स्मरण किया करते थे तथा योगारूढ़ होकर उसी का ध्यान लगाते थे। जगनियन्ता परमात्मा के स्वरूप, उसको प्राप्त करने की विधि क्या है इसका उत्तम ढंग से वर्णन श्री कृष्ण ने किया है। वे स्वयं उस अजन्मा, अकाय, सर्वव्यापक, निराकार और निर्विकार ओ३म् का ही ध्यान प्रात: सायं किया करते थे। उसी सर्वरक्षक परमात्मा की उपासना वे किया करते थे जिसे गीता में उन्होंने सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, दोषों से रहित, विकारों से रहित, दुखों से छूटा हुआ, सुखस्वरूप माना है। अत: जन्माष्टमी का पर्व मनाते हुए हमारा कर्त्तव्य बनता है कि हम श्री कृष्ण के सम्बन्ध में फैली निराधार भ्रान्तियों को दूर करें। पुराणों द्वारा जो विकृत स्वरूप श्री कृष्ण का प्रस्तुत किया गया है उसका बहिष्कार करें। गोपियों के साथ नाचने वाले, रासलीला रचाने वाले, जिस कामी, भोगी और रसिक कृष्ण का जो चरित्र जन साधारण में प्रचलित है उसके स्थान पर आदर्श गुणों से सम्पन्न, योगीराज, नीतिवेत्ता, ईश्वर के उपासक, श्री कृष्ण का चरित्र जन साधारण में प्रस्तुत करें ताकि आम जनता को उनके आदर्श और प्रेरणादायक चरित्र का ज्ञान हो सके। इस पर्व को मनाते हुए श्री कृष्ण के प्रभुभक्त और एक ईश्वर के उपासक स्वरूप का गुणगान करें और उनके जीवन से प्रेरणा लें तभी हमारा जन्माष्टमी के पर्व को मनाने की सार्थकता है।

वेद प्रचार पखवाड़े का आयोजन

आर्य समाज मन्दिर मॉडल टाऊन जालन्धर में वेद प्रचार पखवाड़े का आयोजन दिनांक 26 अगस्त 2018 से लेकर 9 सितम्बर 2018 तक बड़े उत्साह से किया जा रहा है। श्रावणी उपाकर्म का यह महान् पर्व भिन्न-भिन्न परिवारों की ओर से आर्य समाज मन्दिर में आयोजित किया जा रहा है। इस शुभावसर पर आचार्य राजू वैज्ञानिक के प्रवचन तथा श्रीमती रश्मि घई एवं श्री सुरेन्द्र सिंह गुलशन जी के मधुर भजन होंगे। इस कार्यक्रम का शुभारम्भ 26 अगस्त रविवार से आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी के परिवार द्वारा आयोजित सत्संग से होगा। 27-8-2018- प्रिंसिपल विनोद कुमार, 28-8-2018 श्रीमती विजय चोपड़ा, 29-8-2018 श्रीमती सरिता विज, 30-8-2018 डॉ. रवि महेन्द्रू, 31-8-2018 श्रीमती सबीना एवं श्री नवनीत भसीन, 01-09-2018 डॉ. अश्विनी सूरी, 02-09-2018 श्री बलदेव मैहता, 03-09-2018 श्री अजय एवं रवि महाजन, 04-09-2018 डा. ऋषि कुमार आर्य, 05-09-2018 प्रिं पी.पी. शर्मा एवं श्री ए.के. शर्मा, 06-09-2018 श्रीमती रमा एवं श्री के.के. नागपाल, 07-09-2018 श्रीमती लक्ष्मी राजदान, 08-09-2018 श्री अशोक परूथी, 09-09-2018 श्रीमती सुशीला भगत। इन परिवारों की तरफ से आर्य समाज मन्दिर में सत्संग का तथा जलपान का आयोजन किया जाएगा। आप सभी सादर आमन्त्रित हैं। परिवार तथा इष्टमित्रों सहित उपस्थित होकर जीवन सफल करें।

-अरविन्द घई प्रधान आर्य समाज मॉडल टाऊन जालन्धर

पृष्ठ 4 का शेष-श्रीकृष्ण का अनुपम व्यक्तित्व

ही देखते श्रीकृष्ण जी ने चाणूर का तथा बलराम जी ने मुष्टिक का काम तमाम कर दिया। उनको समाप्त करके श्रीकृष्ण जी ने कंस को जा पकड़ा तथा बलराम जी ने उसके भाई सुनामा को पकड़ लिया और द्वन्द्वयुद्ध में उनकी जीवन लीला समाप्त कर दी। कंस का ससुर जरासन्ध उन दिनों बहुत दुराचारी राजा था तथा उसने 86 राजाओं को अपनी कैद में बन्द कर रखा था। कंस की मृत्यु का समाचार सुनकर उसने मथुरा पर आक्रमण कर दिया। एक नीति के तहत श्रीकृष्ण जी ने मथुरा छोड़ दी तथा द्वारिका चले गए मगर जरासन्ध को समाप्त करने का अवसर उन्हें उस समय मिला जब महाराज युधिष्ठिर ने राजसूय यज्ञ का आयोजन किया। उस समय भीमसेन ने द्वन्द्वयुद्ध में जरासन्ध को मार गिराया। द्वारिका निवास के समय बलराम जी का विवाह रैवतक राजा की पुत्री रेवती के साथ तथा श्रीकृष्ण जी का विवाह रूक्मणी के साथ सम्पन्न हुआ था।

श्रीकृष्णजी ने युद्ध को रोकने का पूरा प्रयास किया मगर जब युद्ध अनिवार्य हो गया तो उन्होंने न केवल अर्जुन का मोह भंग करके उसे युद्ध के लिए तैयार किया बल्कि भीष्म, जयद्रथ, कर्ण, द्रोण तथा दुर्योधन को समाप्त करने में भी उनका ही मुख्य हाथ रहा है। श्री कृष्ण जी के जीवन का लक्ष्य भले ही राजनैतिक एकता तथा सामाजिक समरसता स्थापित करना रहा हो मगर मुख्य रूप से वे आध्यात्मिक महापुरूष थे। ईश्वरोपासना उनके जीवन का अभिन्न अंग था। वैशम्पायन जी एक स्थान पर जनमेजय जी से कहते हैं कि भगवान श्री कृष्ण आधा पहर रात बीतने पर शैया त्याग कर उठ बैठते थे और ध्यान मार्ग में स्थित हो सत्य सनातन परमेश्वर का चिन्तन, स्तुति, प्रार्थना तथा उपासना किया करते थे।

परमात्मा के ध्यान के बाद दैनिक कर्म शौचादि से निवृत होकर स्नान करते थे और फिर जपने योग्य गायत्री मन्त्र का जप करके अग्निहोत्र किया करते थे। तत्पश्चात् चारों वेदों के विद्वानों को बुलाकर उनसे वेद मन्त्रों का पाठ एवं उपदेश करवाकर उन्हें गोदान किया करते थे। वे इतने अधिक आध्यात्मिक तथा प्रभु भक्त थे कि यात्रा के समय में भी वे सन्ध्योपासना आदि करना नहीं भूलते थे। इसके उनके जीवन में कितने ही उदाहरण मिलते हैं। एक बार जब वे हस्तिनापुर जा रहे थे तो उन्होंने ऋषियों के आश्रम में विश्राम किया। अगले दिन प्रात:काल भी उन्होंने सन्ध्यावन्दन तथा अग्निहोत्र किया था।

वास्तव में श्री कृष्ण जी महाराज एक विलक्षण योद्धा, नीतिवान, धर्मात्मा, योगी, सदाचारी, परोपकारी, निर्भीक, निर्लोभी, शालीन और विनम्र तथा मर्यादा पुरूषोतम थे। इसीलिए उनके समकालीन महापुरूषों भीष्म पितामह, विदुर, महर्षि व्यास आदि ने तो उनकी भूरि-भूरि प्रसंशा की ही है मगर धृतराष्ट्र तथा दुर्योधन भी उनकी प्रशंसा करने वालों में ही थे। बहुत से लोगों को यह भ्रम है कि आर्यसमाज मर्यादा पुरूषोत्तम श्री रामचन्द्र जी तथा योगीराज श्री कृष्ण जी आदि को नहीं मानता है मगर यह उन लोगों की बहुत बड़ी भूल है वास्तव में इन महापुरूषों को केवल और केवल आर्यसमाज ही सही अर्थों में मानता है।

महर्षि दयानन्द जी धर्म को व्यवहार के साथ जोड़ने पर बल देते हैं। उनके अनुसार यह पर्याप्त नहीं कि हम इन महापुरूषों को मानें बल्कि हमें उन्हें तो मानना चाहिए मगर उनकी माननी भी चाहिए। हम चित्र की पूजा न करें बल्कि इन महापुरूषों के चरित्र की पूजा करें अर्थात् जैसे उज्जवल इनके चरित्र थे, उन्हें वैसा ही मानें-जानें और वैसा ही स्वयं भी बनने का प्रयास करें। यह इतना महत्वपूर्ण नहीं है कि हम कितनी बार इनके नाम का जाप करते हैं या इनसे सम्बन्धित ग्रन्थों का पाठ करते हैं बल्कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के अनुसार इससे अधिक महत्वपूर्ण यह है कि हम इनके गुणों तथा शिक्षाओं को कितना आत्मसात् करते हैं। आज इस बात की नितान्त आवश्यकता है कि राष्ट्र और समाज की स्थिति को सुधारने के लिए हम स्वयं ही श्री कृष्ण और अर्जुन जैसे बनें।

पृष्ठ 2 का शेष-लोकतन्त्र के प्रथम प्रणेता...

का मुँह कंस विरोध में रुपान्तरित कर दिया। श्रीकृष्ण की सलाह उनके मनोरंजन मनोविनोद और मस्ती का साधन बन गया।

राजा कंस इस जन आन्दोलन से तिलमिला उठा। उसने साम, दाम, दण्ड, भेद हर तरीके से इस जन आन्दोलन को कुचलने के प्रयास किए और अन्त में जन नायक राधापति सेनानायक श्रीकृष्ण को रास्ते का कांटा समझकर मारने के लिए उपाय किए, परन्तु धनुर्धर, असिधर, गदाधर सुदर्शन चक्रधर, वीर जननायक श्रीकृष्ण का कंस बाल भी बांका न कर सका।

यह मानव जाति के इतिहास में प्रथम जन असहयोग आन्दोलन था। लोकतन्त्र, की पहली सीढ़ी थी। अब श्रीकृष्ण ने आतंक की नाभि पर प्रहार करने का निर्णय किया। वे जीवन-मृत्यु की परवाह न करते हुए कंस के राज भवन में पहुँच मल्लयुद्ध के लिए प्रस्तुत हो गए। कंस ने अपने शक्तिशाली कुख्यात मल्लों को श्रीकृष्ण और बलराम की हत्या करने का कूट सन्देश और संकेत दिया।

परन्तु श्रीकृष्ण और बलराम मल्लयुद्धों में विजेता रहे। उल्टे उन्होंने कंस के मल्लों का प्राणहरण कर लिया। बाजी उलटते देख अराजकता और हाहाकार की स्थिति उत्पन्न हो गई। इसका लाभ उठाते हुए श्रीकृष्ण ने कंस का काम तमाम कर दिया तथा बलराम ने कंस के भाई सुनामा को मौत की नींद सुला दिया।

भारी जोश-खरोश, हंगामे व अराजकता के बीच श्रीकृष्ण ने जन-जन की आवाज कंस के पिता उग्रसैन को राजगद्दी सौंपकर लोकतन्त्र की विजय की घोषणा कर दी। यह लोकतन्त्र की पहली विजय थी, जिसका श्रेय श्रीकृष्ण की सेना 'राधा' और गोप-गोपियों को था। राधापति कृष्ण लोकतन्त्र के प्रथम प्रणेता बन गए।

डॉ. निर्मल सहसंयोजक नियुक्त

सरकारी बरजिंदरा कालेज फरीदकोट में प्राध्यापक के पद से सेवानिवृत्त प्राध्यापक हिंदी व संस्कृत के प्रबुद्ध व विद्वान लेखक के रूप में जाने जाते, डॉ. निर्मल कौशिक को सह-संयोजक नियुक्त किया है। पिछले करीब 40 वर्षों से वो संस्कृत भाषा के उत्थान, विकास व प्रचार प्रसार में लगे हुए हैं।

इनके प्रयास से ही पिछले तीन वर्षों से फरीदकोट में राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान नई दिल्ली (मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार) द्वारा अनौपचारिक संस्कृत शिक्षण केंद्र स्थापित किए गए हैं। इन केंद्रों में किसी भी आयु वर्ग का व्यक्ति (स्त्री-पुरुष) एक वर्षीय कोर्स से संस्कृत भाषा सीख सकता है और इस कोर्स की वार्षिक फीस मात्र 350 रुपये है। इसके लिए इस बार फरीदकोट में तीन केंद्र स्थापित किए गए हैं। जिनमें मुख्य केंद्र स्थानीय सरकारी बरजिंदरा कालेज, उप केंद्र पंडित चेतन देव सरकारी कालेज आफ एजूकेशन और उप केंद्र आर्य समाज मंदिर शामिल हैं। इन तीनों केंद्रों में दो-दो वर्ग स्थापित किए जाएंगे। एक वर्ग में 30 विद्यार्थी होंगे। पंजाब प्रांत में संस्कृत भाषा के अध्ययन अध्यापन की सुविधा हेतू केंद्र सरकार द्वारा फरीदकोट में ही अनौपचारिक संस्कृत शिक्षण केंद्र स्थापित किए गए हैं। इन केंद्रों के संचालन हेतू डॉ. निर्मल कौशिक को संस्कृत भाषा के प्रति किए गए विकास कार्यों व सेवाओं के मद्देनजर, उन्हें राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली द्वारा सह-संयोजक नियुक्त किया गया है। जो उनके लिए बड़े ही गौरव की बात है।

डॉ. निर्मल कौशिक के मुताबिक फरीदकोट में इन केंद्रों को सुचारू ढंग से चलाने के लिए वो अपने इस दायित्व को निभाने का भरपूर प्रयास करेंगे। इन केंद्रों में शिक्षण के लिए वृन्दावन के सुदर्शन महराई की नियुक्ति की गई है जोकि संस्कृत भाषा के प्रकांड विद्वान है। फरीदकोट निवासी इस बात के लिए सौभाग्यशाली हैं कि उन्हें इस भाषा को सीखने का स्वर्णिम अवसर प्राप्त हुआ है।

दयानन्द पब्लिक स्कूल लुधियाना में स्वतंत्रता दिवस मनाया

स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में आर्य विद्या परिषद पंजाब के रजिस्ट्रार श्री अशोक परूथी जी एडवोकेट, श्री सुदेश कुमार जी सभा मंत्री, श्रीमती राजेश शर्मा जी सभा उप प्रधाना एवं श्री विजय सरीन जी सभा मंत्री दयानन्द पब्लिक स्कूल, दीपक सिनेमा रोड लुधियाना में पधारे। इस अवसर पर प्रबन्ध समिति के प्रधान श्री संत कुमार एवं अन्य सभा अधिकारियों को सम्मानित करते हुये। चित्र दो में स्वतंत्रता दिवस पर बच्चे देश भक्ति का गीत पेश करते हुये जबकि चित्र तीन में उपस्थित बच्चे।

दयानन्द पब्लिक स्कूल दीपक सिनेमा रोड लुधियाना में 15अगस्त को स्वतन्त्रता दिवस बड़े धूमधाम एवं हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर मुख्यातिथि के रूप में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के रजिस्ट्रार श्री अशोक परूथी जी तथा मन्त्री श्री सुदेश कुमार जी जालन्धर से पधारे। स्कूल की प्रबन्धक कमेटी के प्रधान श्री सन्त कुमार तथा अन्य पदाधिकारियों ने पुष्पगुच्छ देकर सम्मानित किया। स्कूल के प्रांगण में श्री अशोक परूथी जी के द्वारा तिरंगा फहराकर देश के लिए बलिदान होने वाले शहीदों को नमन किया गया। समारोह का शुभारम्भ हॉल के अन्दर ज्योति प्रज्जवलन से हुआ। सभी गणमान्य महानुभावों ने ज्योति प्रज्वलित की। दयानन्द पब्लिक स्कूल के बच्चों ने देशभक्ति के तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम पेश करके सभी को मन्त्रमुग्ध कर दिया। कार्यक्रम के मुख्यातिथि श्री अशोक परूथी तथा श्री सुदेश कुमार ने उपस्थित बच्चों तथा अन्य लोगों को सम्बोधित करते हुए स्वतन्त्रता दिवस की हार्दिक बधाई दी तथा शहीदों के जीवन से प्रेरणा लेने का संदेश दिया। उन्होंने कहा कि देश की आजादी में 85 प्रतिशत आर्य समाज का योगदान है। आज भी हम अपने-अपने कर्त्तव्य का पालन करते हुए देश की उन्नति में अपना योगदान दे सकते हैं। स्कूल के प्रधान श्री सन्त कुमार ने भी सभी को 15 अगस्त की शुभकामनाएं दी। स्कूल की प्रिंसिपल तथा प्रबन्धक कमेटी के उपप्रधान श्री गोपाल कृष्ण अग्रवाल जी ने सभी आए हुए गणमान्य अतिथियों का धन्यवाद किया। यह कार्यक्रम श्री गोपाल कृष्ण अग्रवाल जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर जिला आर्य सभा की प्रधान श्रीमती राजेश शर्मा, महामन्त्री श्री विजय सरीन, आर्य समाज दाल बाजार के प्रधान श्री सतपाल नारंग, मन्त्री श्री सुरेन्द्र टण्डन, श्री रमाकान्त महाजन, श्री अजय बत्रा, श्री सत्यभूषण बांगिया, श्री के.के. पासी तथा अन्य महानुभाव उपस्थित थे।

– प्रिंसिपल
दयानन्द पब्लिक स्कूल

श्रीकृष्ण से सम्बन्धित प्रश्नोत्तरी

श्री सुरेन्द्र मोहन तेजपाल अधिष्ठाता साहित्य विभाग द्वारा प्रसिद्ध विद्वानों के सहयोग से तैयार प्रश्नोत्तरी। आशा है आर्य मर्यादा के पाठक इससे लाभान्वित होंगे।

प्र.51-दुर्योधन ने सहायतार्थ श्री कृष्ण से क्या मांगा?
उत्तर- नारायणी सेना।

प्र.52-क्या श्री कृष्ण दैनिक अग्निहोत्र किया करते थे?
उत्तर-हाँ करते थे।

प्र.53-श्री कृष्ण के शंख का क्या नाम था?
उत्तर- पाञ्चजन्य।

प्र.54-महाबली अर्जुन का सारथि कौन था?
उत्तर-श्री कृष्ण।

प्र.55-श्री कृष्ण के सारथि का क्या नाम था?
उत्तर-दारूक।

प्र.56-अर्जुन विषाद के समय श्री कृष्ण ने कौन सा उपदेश दिया?
उत्तर- गीता ज्ञान

प्र.57-श्री कृष्ण ने गीता का उपदेश कहां दिया?
उत्तर- युद्ध भूमि कुरूक्षेत्र में।

प्र.58-गीता के कितने श्लोक हैं?
उत्तर- 701

प्र.59-गीता के अध्याय कितने हैं?
उत्तर- 18

प्र.60-श्री कृष्ण को योगीराज क्यों कहते हैं?
उत्तर-कर्मयोग, भक्तियोग और ज्ञानयोग का विस्तृत ज्ञान देने के कारण।

प्र.61-श्री कृष्ण ने मनुष्य स्वभाव के कितने गुण बताए?
उत्तर-तीन गुण।

प्र.62-तीन गुण कौन से हैं?
उत्तर- रजोगुण, तमोगुण और सतोगुण।

प्र.63- श्री कृष्ण ने गीता में क्या उपदेश दिया?
उत्तर-व्यक्ति कर्म करने में स्वतन्त्र फल भोगने में नहीं।

प्र.64- श्री कृष्ण ने यज्ञशेष का महत्त्व बताते हुए क्या कहा?
उत्तर- यज्ञशेष खाने वाले पापों से मुक्त हो जाते हैं।

प्र.65-महाभारत में कौन से दिन श्री कृष्ण अपनी प्रतिज्ञा को तोड़कर भीष्म को मारने के लिए दौड़े?
उत्तर-तीसरे दिन।

प्र.66-गीता सार क्या है?
उत्तर- निष्काम कर्म की प्रेरणा।

प्र.67- भीष्म पितामह को मारने के लिए श्री कृष्ण ने किसको सेनापति बनाया?
उत्तर-शिखण्ड़ी को।

प्र.68-हृदय की दुर्बलता को त्याग कर युद्ध करने के लिए श्री कृष्ण ने किसे कहा?
उत्तर-अर्जुन को कहा।

प्र.69-गोकुल वासियों को बचाने के लिए श्री कृष्ण द्वारा किए गए किन्हीं दो कार्यों का उल्लेख करो?
उत्तर-पागल साँड अरिष्टि और केशी नामक घोड़े से रक्षा।

प्र.70-बज्रवासियों को बचाने के लिए श्री कृष्ण उन सबको कहां ले गए?
उत्तर-गोवर्धन पर्वत पर।

प्र.71- श्री कृष्ण के कुल का विनाश युद्ध के कितने वर्ष बाद हुआ?
उत्तर-36 वर्ष बाद।

प्र.72-श्री कृष्ण का देहान्त कैसे हुआ?
उत्तर- वृक्ष के नीचे ध्यानावस्थित अवस्था में भ्रम से शिकारी के तीर से।

प्र.73-महर्षि दयानन्द ने श्रीकृष्ण को क्या माना है?
उत्तर- आप्त पुरूष

प्र.74- आर्य समाज श्रीकृष्ण को क्या मानता है?
उत्तर- महापुरूष, योगीराज

प्र.75-श्रीकृष्ण के चरित्र को बिगाड़ने में किस पुराण की भूमिका है?
उत्तर- भागवत पुराण।

प्र.76- पुराणों में श्रीकृष्ण को क्या माना गया है?
उत्तर- विष्णु का अवतार।

प्र.77- भागवत पुराण में श्रीकृष्ण को किस रूप में प्रस्तुत किया गया है?
उत्तर- माखनचोर, रसिक, भोगी, गोपियों के वस्त्र चुराने वाला।

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com, www.aryapratinidhisabha.org
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।